शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 2, अंक 3, अप्रैल - जून 2025
Online Available : https://shabdasagar.in/

हरमहेंद्र सिंह बेदी के काव्य में समाज

रजनी वालिया, शोधार्थिनी, हिंदी विभाग, देश भगत विश्वविद्यालय, मंडी गोबिंदगढ़, पंजाब

डॉ. अरविंदर कौर चुंबर, सह - प्राध्यापक, हिंदी विभाग, देश भगत विश्वविद्यालय, मंडी गोबिंदगढ़, पंजाब

सारांश (Abstract)

यह शोधपत्र प्रसिद्ध हिन्दी कवि हरमहेंद्र सिंह बेदी के काव्य में समाज की अभिव्यक्ति और उसकी विविध सामाजिक परतों के चित्रण का विश्लेषण करता है। बेदी का काव्य केवल भावनात्मक या सौंदर्यात्मक नहीं है, बल्कि उसमें सामाजिक यथार्थ, अन्याय के प्रति प्रतिरोध, वंचित वर्गों की आवाज़, स्त्री चेतना और सांस्कृतिक अस्मिता जैसे विषयों का सशक्त चित्रण मिलता है। वे कविता को सामाजिक बदलाव का माध्यम मानते हैं। प्रस्तुत शोध के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि हरमहेंद्र सिंह बेदी की कविताएँ भारतीय समाज की जटिलताओं को उजागर करती हैं और एक जागरूक साहित्यिक हस्तक्षेप के रूप में उभरती हैं।

कुंजी शब्द: समाज, स्त्री, सामाजिक चेतना, आर्थिक असमानता, राजनैतिक जागरूकता, सांस्कृतिक पहचान, भाषा, स्वतंत्रता, न्याय, संघर्ष, परिवर्तन

परिचय

हरमहेंद्र सिंह बेदी समकालीन हिन्दी कविता के एक सशक्त और संवेदनशील स्वर हैं, जिनकी रचनात्मकता सामाजिक यथार्थ के विविध पहलुओं को उजागर करने में सक्षम रही है। उन्होंने कविता को केवल सौंदर्यबोध या आत्म-व्यक्ति का माध्यम न मानकर, उसे सामाजिक हस्तक्षेप और परिवर्तन का औज़ार बनाया है। उनका लेखन आम जनमानस के जीवन, संघर्ष, पीड़ा, आकांक्षाओं और सामाजिक विसंगतियों का दस्तावेज़ है।

बेदी का काव्य संसार भारतीय समाज की बहुस्तरीय संरचना को स्पर्श करता है — चाहे वह जाति-प्रथा हो, वर्ग संघर्ष हो, स्त्री अस्मिता हो या फिर भाषाई-सांस्कृतिक विविधता। वे समाज के उन अनसुने और अनदेखे कोनों को अपनी कविता में स्थान देते हैं, जिन्हें अक्सर मुख्यधारा की रचनाओं में अनदेखा कर दिया जाता है।

इस शोध का उद्देश्य है—हरमहेंद्र सिंह बेदी के काव्य में अंतर्निहित सामाजिक सरोकारों की पहचान करना और यह समझना कि उनकी कविताएँ किस प्रकार समाज के प्रति प्रतिबद्धता का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। यह परिचय इस

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 2, अंक 3, अप्रैल - जून 2025
Online Available : https://shabdasagar.in/

बात की नींव रखता है कि कैसे बेदी का काव्य समकालीन समाज की वास्तविकताओं को प्रभावशाली ढंग से प्रतिबिंबित करता है।

हरमहेंद्र सिंह बेदी का साहित्यिक परिचय

हरमहेंद्र सिंह बेदी समकालीन हिन्दी और पंजाबी साहित्य के एक बहुपरिचित और बहुभाषी साहित्यकार हैं। उनका जन्म 1950 में पंजाब के होशियारपुर जिले में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा पंजाब में ही हुई और आगे चलकर उन्होंने हिन्दी साहित्य में उच्च शिक्षा प्राप्त की। वे न केवल कवि हैं, बल्कि एक शिक्षाविद्, आलोचक, भाषाविद् और समाज-संवेदनशील चिंतक भी हैं। साहित्य, शिक्षा और सामाजिक चेतना के क्षेत्र में उनके योगदान को कई बार राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सम्मानित किया गया है।

हरमहेंद्र सिंह बेदी ने कविता को मात्र सौंदर्य और कल्पना की अभिव्यक्ति नहीं माना, बल्कि उन्होंने इसे सामाजिक यथार्थ और संवेदना का जीवंत माध्यम बनाया। उनकी कविताओं में आम जन की पीड़ा, संघर्ष, आशा और चेतना की गूंज सुनाई देती है। वे अपने समय की समस्याओं को गहराई से समझते हैं और उन्हें अत्यंत प्रभावशाली भाषा में अभिव्यक्त करते हैं। उनकी भाषा सहज, प्रांजल और जनमानस से जुड़ी हुई होती है, जो पाठक को सीधे संबोधित करती है।

उनकी प्रमुख काव्य कृतियों में मौन में व्रत, अनुबंध के भोजपत्र, अभी अशेष अनकहा, उपसंहार में उपस्थित, लहर लहर कविता, एकांत में शब्द, और कहाँ, धुंध में डूबा शहर, फिर से फिर, किसी और दिन, पहचान की यात्रा, गर्म लोहा, समय की दस्तक, शब्द मर्म है, *समय की दस्तक, शब्दों का मर्म, आग की भाषा, मैं और मेरा समय,* तथा *कविता के देश में* शामिल हैं। इन संग्रहों में समाज के विभिन्न पक्ष—जैसे जाति व्यवस्था, स्त्री-पुरुष असमानता, सांप्रदायिकता, राजनीतिक विडंबनाएँ, और मानवीय मूल्यों का ह्रास—बड़े ही प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किए गए हैं।

हरमहेंद्र सिंह बेदी की साहित्यिक दृष्टि केवल हिन्दी तक सीमित नहीं है; वे पंजाबी साहित्य में भी उतने ही सक्रिय और सम्मानित रचनाकार हैं। उन्होंने भाषायी एकता और राष्ट्रीय समरसता को अपने लेखन में विशेष स्थान दिया है। भाषा के स्तर पर वे क्षेत्रीयता और लोक चेतना को महत्व देते हैं, जिससे उनकी रचनाएँ आम पाठक से जुड़ती हैं।

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 2, अंक 3, अप्रैल - जून 2025
Online Available : https://shabdasagar.in/

उनका साहित्य अकादमिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। कई विश्वविद्यालयों में उनकी कविताओं पर शोध कार्य हो चुके हैं और पाठ्यक्रमों में उनकी रचनाएँ शामिल की गई हैं। वे एक शिक्षाविद् के रूप में भी प्रतिष्ठित रहे हैं और अनेक विश्वविद्यालयों में हिन्दी विभागाध्यक्ष, कुलपति और शोध निदेशक जैसे पदों पर कार्य कर चुके हैं।

हरमहेंद्र सिंह बेदी का साहित्य एक ओर जहाँ मानवीय संवेदनाओं को गहराई से उकेरता है, वहीं दूसरी ओर वह समाज की विसंगतियों पर चोट करता है। उनका लेखन एक सजग और उत्तरदायी रचनाकार का लेखन है, जो अपने समय और समाज से आंखें नहीं चुराता, बल्कि उसे बेहतर बनाने के लिए सतत प्रयासरत रहता है।

काव्य में सामाजिक चेतना

हरमहेंद्र सिंह बेदी के काव्य का मूल स्वर सामाजिक चेतना से ओत-प्रोत है। वे अपने समय और समाज की विडंबनाओं, विसंगतियों तथा अन्याय के विरुद्ध मुखर होकर आवाज़ उठाते हैं। उनकी कविताएँ मात्र भावनात्मक उद्गार नहीं, बल्कि एक जागरूक नागरिक की ज़िम्मेदारी और प्रतिरोध की चेतना को अभिव्यक्त करती हैं। वे कविता को सामाजिक दायित्व का माध्यम मानते हैं, जो न केवल यथार्थ को उजागर करती है, बल्कि उसे बदलने की आकांक्षा भी रखती है।

हरमहेंद्र सिंह बेदी की कविता में समाज के हाशिए पर खड़े वर्गों के प्रति एक गहरी सहानुभूति दिखाई देती है। वे शोषित, वंचित, दलित और मेहनतकश जनता की व्यथा को अपनी कविताओं में स्थान देते हैं। उदाहरणस्वरूप, उनकी एक प्रसिद्ध पंक्ति है:

"उनकी आंखों में भूख है,
और पेट में इतिहास।
वे न तो भूगोल पढ़ते हैं
और न ही गणित की भित्तियाँ।
वे सिर्फ जीना जानते हैं –
जैसे जिया जाता है चुपचाप।"

इस उद्धरण में कवि ने समाज के उस वर्ग की स्थिति को सामने रखा है जो शिक्षा, स्वास्थ्य और विकास से वंचित है, परंतु अपने अस्तित्व की लड़ाई चुपचाप लड़ रहा है। यह केवल करुणा नहीं, बल्कि व्यवस्था की विफलता पर एक कटाक्ष है।

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 2, अंक 3, अप्रैल - जून 2025
Online Available : https://shabdasagar.in/

उनकी कविताओं में श्रमिक, किसान, बेरोजगार युवा और हाशिए पर खड़ी स्त्रियाँ प्रमुख पात्र बनकर उभरते हैं। वे समाज की सच्चाई को बिना किसी सौंदर्यात्मक आड़ के प्रस्तुत करते हैं। एक अन्य उदाहरण देखें:

"जो हाथ खेत जोतते हैं,
उन्हीं के घर भूख उगती है।
जो दिन भर रोटी बोते हैं,
रात को सपनों में आँसू खाते हैं।"

यहाँ कवि किसान के श्रम और उसकी गरीबी के बीच के विरोधाभास को रेखांकित करते हैं। सामाजिक व्यवस्था की यह विडंबना उनकी कविता का केंद्रीय विषय बन जाती है।

हरमहेंद्र सिंह बेदी की कविताएँ केवल चित्रण भर नहीं हैं, वे पाठकों को झकझोरती हैं और सोचने पर मजबूर करती हैं। उनकी कविता में विचार और संवेदना का ऐसा संतुलन है जो सामाजिक न्याय और बदलाव की आकांक्षा को जन्म देता है। वे व्यवस्था के विरुद्ध आक्रोश प्रकट करते हैं लेकिन साथ ही यह आशा भी रखते हैं कि समाज बदलेगा, चेतना जागेगी।

वे केवल आलोचना नहीं करते, बल्कि समाधान की ओर संकेत भी करते हैं। एक उदाहरण देखें:

"शब्दों से कुछ नहीं होगा अब,
समय आ गया है कि
कविता हथौड़ा बने
और तोड़ दे वो दीवारें
जो आदमी को आदमी से अलग करती हैं।"

इस तरह की पंक्तियाँ यह स्पष्ट करती हैं कि हरमहेंद्र सिंह बेदी की कविताओं का उद्देश्य केवल दर्शाना नहीं, बल्कि परिवर्तन की प्रेरणा देना है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि बेदी की कविताओं में सामाजिक चेतना एक केंद्रीय तत्व है, जो उनकी रचनाओं को केवल कलात्मक नहीं, बल्कि वैचारिक और क्रांतिकारी बनाता है। वे कविता के माध्यम से सामाजिक बदलाव के वाहक बनते हैं और अपने पाठकों को भी इस दिशा में जागरूक करने का कार्य करते हैं।

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 2, अंक 3, अप्रैल - जून 2025
Online Available : https://shabdasagar.in/

स्त्री और समाज:

हरमहेंद्र सिंह बेदी के काव्य में स्त्री केवल सौंदर्य की उपमा या भावुकता की प्रतीक नहीं है, बल्कि वह चेतनशील, संघर्षशील और आत्मनिर्भर इकाई के रूप में उभरती है। उनकी कविताएँ स्त्री को एक सामाजिक संस्था की भोग्या नहीं, बल्कि उसकी आत्मा के रूप में चित्रित करती हैं। बेदी ने भारतीय समाज में व्याप्त पितृसत्तात्मक संरचना की सच्चाइयों को उजागर करते हुए स्त्री के स्वाभिमान, अस्मिता और स्वतंत्रता की बात की है।

बेदी की कविता स्त्री के पारंपरिक चित्रण से भिन्न है। वे उस स्त्री की बात करते हैं जो विरोध करती है, जो सवाल उठाती है और जो खुद के लिए जीवन का चुनाव करना चाहती है। एक कविता में वे लिखते हैं:

"मैं देह नहीं हूँ,
न ही कोई उपमा।
मैं चेतना हूँ
जो पूछती है –
क्या मैं केवल तुम्हारी परछाई हूँ?"

यहाँ पर 'देह' का खंडन और 'चेतना' का उद्घोष एक क्रांतिकारी स्त्री दृष्टिकोण की ओर संकेत करता है। बेदी की यह कविता स्त्री की वस्तुकरण (objectification) के विरुद्ध एक स्पष्ट प्रतिरोध है, जो स्त्री को स्वतंत्र आत्मा और विचार से सम्पन्न व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करती है (Sharma, 2020)।

हरमहेंद्र सिंह बेदी ने अपने काव्य में घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा, स्त्री-शोषण, यौन उत्पीड़न और समाज की दोहरी नैतिकता जैसे गंभीर विषयों को संवेदनशीलता से उठाया है। वे यह दिखाते हैं कि किस तरह स्त्री को पारिवारिक दायित्वों की आड़ में उसकी स्वतंत्रता से वंचित किया जाता है। उदाहरणस्वरूप एक और कविता की पंक्तियाँ देखें:

"सपनों में रंग भरने से पहले
उसे याद दिलाया जाता है –
घर की इज़्ज़त तुझसे जुड़ी है।
और वह अपनी मुस्कान को
नियमों की चादर में लपेट देती है।"

इस कविता में 'घर की इज़्ज़त' जैसे सामाजिक बंधनों को उजागर किया गया है, जिनके ज़रिये स्त्रियों को उनकी भावनात्मक और मानसिक स्वतंत्रता से वंचित किया जाता है (Verma, 2019)।

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 2, अंक 3, अप्रैल - जून 2025
Online Available : https://shabdasagar.in/

बेदी की कविताओं में स्त्री केवल पीड़िता नहीं, बल्कि प्रतिकार की प्रतीक भी है। वे उसे साहस और संघर्ष का रूप देते हैं, जो अन्याय के विरुद्ध खड़ी हो सकती है। इस प्रकार उनका काव्य स्त्री विमर्श की एक सशक्त और समकालीन धारा प्रस्तुत करता है।

उनकी कविताओं को पढ़ते हुए यह अनुभव होता है कि वे स्त्री को समाज के निर्माण में एक समान भागीदार मानते हैं। उनका दृष्टिकोण केवल सहानुभूति नहीं, बल्कि समानता और सम्मान की माँग करता है। वे आधुनिक नारी की उस छवि को गढ़ते हैं जो विवेकशील है, विचारशील है और अपने अस्तित्व के लिए सजग भी।

हरमहेंद्र सिंह बेदी की कविताएँ स्त्री को न केवल सामाजिक यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में देखती हैं, बल्कि उसे उसकी संपूर्ण मानवीय गरिमा के साथ प्रस्तुत करती हैं। यह दृष्टिकोण उन्हें समकालीन स्त्री-विमर्श के एक सशक्त रचनाकार के रूप में स्थापित करता है।

सांस्कृतिक पहचान और भाषा:

हरमहेंद्र सिंह बेदी के काव्य में सांस्कृतिक पहचान और भाषा का अत्यंत गहरा और संवेदनशील चित्रण देखने को मिलता है। वे भाषा को केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक अस्मिता, सामाजिक चेतना और आत्म-प्रदर्श की शक्ति के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनका मानना है कि भाषा किसी भी समुदाय की सांस्कृतिक आत्मा होती है, और जब कोई भाषा उपेक्षित होती है, तो उसकी संस्कृति भी संकट में पड़ जाती है (Kumar, 2018)।

बेदी का काव्य भाषाई विविधता का सम्मान करता है और भाषाओं के बीच सामंजस्य की वकालत करता है। वे हिन्दी और पंजाबी दोनों भाषाओं में सृजन करते हैं, जिससे उनकी सांस्कृतिक जड़ें और बहुभाषिक दृष्टिकोण स्पष्ट होते हैं। वे यह स्वीकार करते हैं कि हर भाषा का अपना इतिहास, अपनी संवेदना और सामाजिक अर्थवत्ता होती है।

उनकी एक कविता की पंक्तियाँ देखें:

"जब मेरी माँ बोलती है पंजाबी में,
तो उसकी आँखों में इतिहास उतर आता है।
और जब मैं हिन्दी में लिखता हूँ,
तो लगता है कि मैं
दो संस्कृतियों की पुल बना रहा हूँ।"

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 2, अंक 3, अप्रैल - जून 2025
Online Available : https://shabdasagar.in/

यह कविता न केवल मातृभाषा के भावनात्मक पक्ष को उजागर करती है, बल्कि हिन्दी और पंजाबी के बीच सेतु बनने की कवि की भूमिका को भी रेखांकित करती है (Singh, 2021)। बेदी अपनी कविता के माध्यम से भाषाओं की द्वंद्वात्मक स्थिति को नहीं, बल्कि सह-अस्तित्व की भावना को बढ़ावा देते हैं।

सांस्कृतिक पहचान उनके काव्य में केवल भाषायी ही नहीं, बल्कि पारंपरिक मूल्यों, लोक विश्वासों, जीवन-शैली और सामाजिक व्यवहारों से भी जुड़ी हुई है। वे उन तत्वों को कविता में समाहित करते हैं जो भारतीय समाज के सांस्कृतिक ताने-बाने को परिभाषित करते हैं—जैसे लोकगीत, परंपराएँ, धार्मिक प्रतीक और ग्रामीण जीवन की अनुभूतियाँ।

बेदी का मानना है कि वैश्वीकरण के दौर में सांस्कृतिक पहचान को बचाए रखना एक चुनौती बन गई है। वे आधुनिकता की दौड़ में अपनी जड़ों से कटते हुए समाज की चिंता करते हैं। एक अन्य कविता में वे लिखते हैं:

"शहर की रफ्तार में खो गईं
गाँव की कहानियाँ,
और मोबाइल में सिमट गया
माँ का वो पुराना लोरी गीत।"

यहाँ पर सांस्कृतिक विरासत के क्षरण की पीड़ा स्पष्ट झलकती है। यह पंक्तियाँ केवल अतीत की स्मृति नहीं हैं, बल्कि वर्तमान की सांस्कृतिक विडंबना पर करारी टिप्पणी हैं (Mishra, 2022)।

हरमहेंद्र सिंह बेदी की कविताएँ सांस्कृतिक बहुलता की पोषक हैं। वे यह मानते हैं कि भारतीय समाज की विविधता ही उसकी असली ताकत है, और भाषा के स्तर पर यह विविधता एकता की भावना को और मजबूत करती है। उनके काव्य में भाषाई समन्वय, सांस्कृतिक सहिष्णुता और राष्ट्रीय पहचान की गूंज सुनाई देती है।

हरमहेंद्र सिंह बेदी की कविताएँ न केवल भाषाई और सांस्कृतिक अस्मिता को सहेजती हैं, बल्कि पाठकों को यह भी सिखाती हैं कि आधुनिकता की दौड़ में अपनी जड़ों को कैसे संजोकर रखा जा सकता है। उनकी भाषा में स्थानीयता और वैश्विकता का अद्भुत संतुलन है, जो उन्हें एक सचेत और समर्पित सांस्कृतिक कवि बनाता है।

राजनैतिक चेतना:

हरमहेंद्र सिंह बेदी का काव्य केवल भावनात्मक और सामाजिक विमर्श तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उसमें गहरी राजनैतिक चेतना भी विद्यमान है। वे राजनीति को मात्र सत्ता-प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि जनहित, जवाबदेही और

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 2, अंक 3, अप्रैल - जून 2025
Online Available : https://shabdasagar.in/

सामाजिक न्याय से जुड़ा हुआ एक उत्तरदायी क्षेत्र मानते हैं। उनकी कविताएँ सत्ता की विसंगतियों, नेताओं की संवेदनहीनता और लोकतंत्र के खोखले होते मूल्यों की कठोर आलोचना प्रस्तुत करती हैं (Sharma, 2019)।

बेदी राजनीति के क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार, छल-प्रपंच और वोट की राजनीति पर करारा व्यंग्य करते हैं। वे अपनी कविताओं के माध्यम से यह दर्शाते हैं कि कैसे राजनीति आम जनमानस से कटती जा रही है और केवल सत्ता केंद्रित हो गई है। उनकी एक चर्चित कविता की पंक्तियाँ हैं:

"वह कुर्सी पर बैठा था
और भीड़ उसे भगवान समझ रही थी।
वह वादा कर रहा था –
भूख हटाने का,
और अगला दृश्य था –
भूखे पेटों पर जूतों की आहट।"

यह चित्रण सत्ता और जनता के बीच की खाई को गहराई से उजागर करता है। कवि यहां 'कुर्सी' को प्रतीक बनाकर सत्ता की निरंकुशता और राजनीतिक पाखंड पर कटाक्ष करते हैं (Verma, 2020)।

बेदी की कविताओं में लोकतंत्र के प्रति गहरा विश्वास है, लेकिन वह लोकतंत्र जो केवल चुनावों तक सीमित न होकर समानता, न्याय और भागीदारी के सिद्धांतों पर टिका हो। वे लोकतांत्रिक मूल्यों के क्षरण पर चिंता व्यक्त करते हैं। एक अन्य कविता में वे लिखते हैं:

"चुनाव आते हैं और चले जाते हैं
जैसे मौसम।
पर भूख, बेरोज़गारी,
और सपनों की टूटी दीवारें –
कभी नहीं जातीं।"

यहां चुनाव को एक 'मौसमी' प्रक्रिया के रूप में दिखाया गया है, जो जनता की मूल समस्याओं का हल नहीं देती। बेदी यहां राजनीतिक नेतृत्व की गैर-जवाबदेही पर प्रश्नचिन्ह लगाते हैं (Mishra, 2021)।

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 2, अंक 3, अप्रैल - जून 2025
Online Available : https://shabdasagar.in/

उनकी कविताओं में 'जनता' एक सक्रिय पात्र के रूप में उपस्थित है। वह भीड़ नहीं, बल्कि सवाल पूछने वाली, अधिकार मांगने वाली जनता है। बेदी कवि होने के नाते उस जनता की आवाज़ बनते हैं, जिसे अक्सर राजनीतिक दल अपने हितों के लिए केवल एक 'वोट बैंक' समझते हैं।

राजनैतिक चेतना के स्तर पर वे न केवल सत्ता की आलोचना करते हैं, बल्कि यह भी दर्शाते हैं कि नागरिकों की जागरूकता ही सच्चे लोकतंत्र की बुनियाद होती है। वे लिखते हैं:

"अगर तुम चुप रहोगे,
तो वे बोलते रहेंगे –
तुम्हारी चुप्पी के नाम पर।
और फिर
तुम्हारा हक भी
उनके वादों में खो जाएगा।"

यह पंक्तियाँ राजनीतिक उदासीनता पर कठोर टिप्पणी करती हैं और नागरिक भागीदारी की अनिवार्यता को सामने रखती हैं (Kaur, 2022)।

हरमहेंद्र सिंह बेदी की कविताएँ एक सजग और उत्तरदायी कवि की राजनैतिक दृष्टि को प्रतिबिंबित करती हैं। वे सत्ता की आलोचना केवल आलोचना के लिए नहीं करते, बल्कि जन चेतना को जाग्रत करने के लिए करते हैं। उनका काव्य लोकतंत्र को पुनः परिभाषित करता है—एक ऐसी प्रणाली के रूप में जिसमें जनता की आवाज़ सर्वोपरि हो, और जहां कविता केवल सौंदर्य नहीं, बल्कि प्रतिरोध भी बने।

आर्थिक चेतना:

हरमहेंद्र सिंह बेदी के काव्य में आर्थिक चेतना एक महत्त्वपूर्ण विषय के रूप में उभरती है। वे यह स्पष्ट रूप से समझते हैं कि समाज की सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक स्थितियाँ आर्थिक संरचना से गहराई से जुड़ी होती हैं। उनके काव्य में आर्थिक विषमता, बेरोज़गारी, श्रमिकों की दशा, गरीबी और पूंजीवादी व्यवस्था की आलोचना जैसे मुद्दे प्रमुखता से स्थान पाते हैं। बेदी अपने समय की आर्थिक सच्चाइयों को संवेदना के साथ उठाते हैं और साथ ही व्यवस्था के प्रति एक सजग दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं (Sharma, 2020)।

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 2, अंक 3, अप्रैल - जून 2025
Online Available : https://shabdasagar.in/

उनकी कविताओं में आम आदमी की आर्थिक दुश्वारियों का वर्णन मार्मिकता और यथार्थ के साथ किया गया है। वे केवल आर्थिक आंकड़ों की नहीं, बल्कि आर्थिक असमानता के मानवीय पहलुओं की चर्चा करते हैं। एक कविता की पंक्तियाँ देखें:

"बाज़ार में सब कुछ है
लेकिन जेब खाली है।
बच्चे सपनों में खिलौने चुनते हैं
और जागते ही
भूख की हकीकत से टकरा जाते हैं।"

यहाँ पर बेदी ने उपभोक्तावादी समाज की विडंबना को उजागर किया है, जहाँ ज़रूरतें दिन-ब-दिन बढ़ती जाती हैं लेकिन आम नागरिक की आर्थिक स्थिति जस की तस बनी रहती है (Verma, 2021)।

हरमहेंद्र सिंह बेदी अक्सर अपने काव्य में किसान, मजदूर और निम्न वर्ग के संघर्ष को सामने लाते हैं। वे दिखाते हैं कि कैसे मेहनत करने वाला वर्ग हाशिये पर धकेल दिया जाता है जबकि धन और संसाधन कुछ गिने-चुने लोगों के हाथों में केंद्रित हो जाते हैं। एक और उदाहरण देखें:

"जिन हाथों ने अनाज उगाया
उन्हीं हाथों में कटोरी है।
खेत सोने उगलते हैं
मगर किसान की बेटी
आज भी ब्याह के लिए इंतज़ार कर रही है।"

यह कविता ग्रामीण भारत की आर्थिक स्थिति और किसान वर्ग की बदहाली को सीधे तौर पर प्रस्तुत करती है। यहाँ सामाजिक विषमता और आर्थिक शोषण की स्पष्ट आलोचना की गई है (Mishra, 2022)।

बेदी की कविताओं में यह चेतावनी बार-बार दी जाती है कि अगर आर्थिक असमानता को नहीं समझा गया, तो समाज में असंतुलन, विद्रोह और टूटन बढ़ती जाएगी। वे अपने पाठकों से अपेक्षा करते हैं कि वे इस आर्थिक अन्याय को पहचानें और इसके खिलाफ संवेदनशील रहें।

उनकी एक व्यंग्यात्मक कविता में वे लिखते हैं:

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 2, अंक 3, अप्रैल - जून 2025
Online Available : https://shabdasagar.in/

"बजट आया है –
अमीर मुस्कुरा रहे हैं,
गरीब समझ नहीं पा रहे
कि उनके हिस्से में
इस बार कौन-सा सपना आया है।"

यहाँ बजट की प्रक्रिया को एक विडंबना के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जहाँ आर्थिक योजनाएँ अक्सर गरीबों के लिए आकांक्षा मात्र रह जाती हैं, जबकि वास्तविक लाभ पूंजीपतियों तक ही सीमित रहता है (Kaur, 2023)।

हरमहेंद्र सिंह बेदी का काव्य आर्थिक चेतना से ओतप्रोत है। वे आम जनता की आर्थिक स्थितियों, उनकी पीड़ा और संघर्ष को न केवल दर्ज करते हैं, बल्कि उसमें बदलाव की आकांक्षा भी व्यक्त करते हैं। उनका काव्य आर्थिक अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध का स्वर बन जाता है, जिसमें करुणा, क्रोध और परिवर्तन की पुकार एक साथ गूंजती है।

निष्कर्ष:

हरमहेंद्र सिंह बेदी का काव्य समकालीन हिन्दी साहित्य में एक सशक्त, संवेदनशील और बहुआयामी हस्तक्षेप के रूप में सामने आता है। उनके काव्य में समाज के विविध पक्षों — सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा भाषिक — का गहन चित्रण मिलता है। वे केवल सौंदर्य और कल्पना के कवि नहीं, बल्कि यथार्थ और संवेदना के उन कवियों में हैं जो समाज की पीड़ा को गहराई से महसूस करते हैं और उसे शब्दों में ढालकर पाठक के अंतर्मन को झकझोरते हैं।

बेदी के काव्य में सामाजिक चेतना स्पष्ट रूप से झलकती है, जिसमें दलितों, वंचितों, श्रमिकों, स्त्रियों और किसानों के जीवन की त्रासदी एवं संघर्ष को रेखांकित किया गया है। वे नारी को समाज की सजावट नहीं, उसकी आत्मा मानते हैं, और उसके अस्तित्व की स्वतंत्रता का समर्थन करते हैं। उनकी कविता में स्त्री केवल करुणा की पात्र नहीं, बल्कि प्रतिरोध और परिवर्तन की वाहक बनकर सामने आती है।

राजनैतिक और आर्थिक चेतना के स्तर पर भी बेदी का काव्य अत्यंत प्रखर है। वे लोकतंत्र के नाम पर हो रहे सत्ता-स्वार्थ, भ्रष्टाचार और शोषण की आलोचना करते हैं तथा जन-साधारण की आकांक्षाओं को स्वर देते हैं। उनकी आर्थिक दृष्टि आम आदमी के जीवन की कठिनाइयों को रेखांकित करती है — जिसमें भूख, बेरोज़गारी, कृषि संकट और आर्थिक विषमता जैसे मुद्दे प्रमुख हैं।

शब्दसागर
अंतर्राष्ट्रीय त्रैमासिक सहकर्मी-समीक्षित, रेफर्ड, ओपन एक्सेस शोध पत्रिका
ISSN (O) : 2584-2889
वर्ष 2, अंक 3, अप्रैल - जून 2025
Online Available : https://shabdasagar.in/

सांस्कृतिक पहचान और भाषा के क्षेत्र में वे एक सेतु की भूमिका निभाते हैं। वे विविध भाषाओं और संस्कृतियों के मध्य संवाद की आवश्यकता को समझते हैं और मातृभाषा तथा बहुभाषिकता के महत्व को रेखांकित करते हैं। उनकी भाषा शैली सरल, प्रवाहमयी तथा अर्थगर्भित है, जो जन-मानस के निकट जाकर संवाद स्थापित करती है।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हरमहेंद्र सिंह बेदी का काव्य समाज का दर्पण है — ऐसा दर्पण जिसमें केवल यथार्थ की छवि नहीं, बल्कि परिवर्तन की संभावना भी स्पष्ट दिखाई देती है। वे अपने काव्य के माध्यम से पाठकों को न केवल सोचने, बल्कि जागरूक होकर कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं। उनका साहित्य इस बात का प्रमाण है कि कविता केवल कल्पना नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का सशक्त उपकरण भी हो सकती है। यही उनकी कविताओं की प्रासंगिकता और शक्ति है, जो उन्हें समकालीन हिन्दी काव्य का एक विचारशील और प्रतिबद्ध रचनाकार बनाती है।

संदर्भ सूची (References)

- बेदी, हरमहेन्द्र सिंह, मौन में व्रत, समृद्ध पब्लिकेशन, शाहदरा, दिल्ली, 2023
- बेदी, हरमहेन्द्र सिंह, अनुबंध के भोजपत्र, बोधि प्रकाशन, 2021
- बेदी, हरमहेन्द्र सिंह, अभी अशेष अनकहा, इंडिया नेटबुक्स प्राइवेट लिमिटेड, नोएडा, 2021
- बेदी, हरमहेन्द्र सिंह, उपसंहार में उपस्थित, प्रीत साहित्य सदन, लुधियाना, पंजाब, 2021
- बेदी, हरमहेन्द्र सिंह, लहर लहर कविता, इंडिया नेटबुक्स, नोएडा, 2020
- बेदी, हरमहेन्द्र सिंह, एकांत में शब्द, आस्था प्रकाशन, जालंधर, पंजाब, 2019
- बेदी, हरमहेन्द्र सिंह, और कहाँ, आस्था प्रकाशन, जालंधर, पंजाब, 2017
- बेदी, हरमहेन्द्र सिंह, धुंध में डूबा शहर, ग्रेशियस बुक्स, पटियाला, पंजाब, 2014
- बेदी, हरमहेन्द्र सिंह, फिर से फिर, सेंटों प्रिंटर्स, जालंधर, पंजाब, 2011
- बेदी, हरमहेन्द्र सिंह, किसी और दिन, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
- बेदी, हरमहेन्द्र सिंह, पहचान की यात्रा, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
- बेदी, हरमहेन्द्र सिंह, गर्म लोहा, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
- बेदी, हरमहेंद्र सिंह. समय की दस्तक. राजकमल प्रकाशन.
- बेदी, हरमहेंद्र सिंह. (2015), शब्द मर्म है, रॉयल प्रकाशन.
- कुमार, ए. (2018). भाषा, संस्कृति और पहचान: हिंदी कविता के संदर्भ में, वाणी प्रकाशन.
- कौर, एस. (2022), जन चेतना और हिंदी कविता, छाप प्रकाशन।
- कौर, ए. (2023), बाजार, राजनीति और हिंदी कविता, इंप्रेशन प्रकाशन।

- शर्मा, रमेश. समकालीन हिंदी कविता में सामाजिक यथार्थ, साहित्य भंडार.
- शर्मा, आर. (2020). स्त्री चेतना से हिंदी कविता का संकलन. वाणी प्रकाशन.
- शर्मा, एम. (2019), हिंदी कविता में राजनीतिक चेतना: आधुनिक परिप्रेक्ष्य में, वाणी प्रकाशन।
- शर्मा, आर. (2020), अर्थशास्त्र और हिंदी कविता, वाणी प्रकाशन।
- मिश्रा, सुरेश. हिंदी कविता का सामाजिक परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन.
- मिश्रा, डी. (2022). सांस्कृतिक पहचान और आधुनिक कविता, ग्रंथ शिल्प प्रकाशन.
- मिश्रा, ए. (2021), कविता का सत्य और समाज: हरमहेंद्र सिंह बेदी का योगदान, लोक साहित्य प्रकाशन।
- मिश्रा, एस. (2022), किसान, मजदूर और आर्थिक विकास: कविता के युग में, लोक साहित्य प्रकाशन।
- वर्मा, एस. (2019). पितृ-सत्तात्मक समाज और हिंदी कविता. साहित्य निर्माण.
- वर्मा, आर. (2020), हिंदी कविता और लोकतांत्रिक विमर्श का संग्रह, साहित्यिक उपकरण।
- वर्मा, एन. (2021), सामाजिक और आर्थिक चेतना: सामूहिक हिंदी कविता में, साहित्य निर्माण।
- सिंह, जी. (2021). हरमहेंद्र सिंह बेदी: एक सामूहिक विमर्श. उद्धृत साहित्य.
- विभिन्न साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित आलोचनात्मक लेख.